मोलकरणी

अवधि : 25 मिनट

प्रस्तुति : युगान्तर

भाषा : हिन्दी

यह फ़िल्म महाराष्ट्र में घरेलू कामगारों के अधिकारों व काम के सम्मान के संघर्ष और आंदोलन को बयान करती है। शुरूआत होती है सुभद्रा नाम की एक घरेलू कामगार से जो अपनी मालकिन से वेतन बढ़ाने के लिए कहती है। उसे सबक सिखाने के लिए मालकिन उसे काम से निकाल देती है और किसी अन्य ज़रूरतमंद कामगार को नौकरी पर रख लेती है। सुभद्रा को यह अन्याय बर्दाश्त नहीं होता और वह अपने इलाके में अन्य कामगार महिलाओं से बात करके उन्हें इस तरह के अन्याय के ख़िलाफ़ एकजुट होने को प्रेरित करती है।

सुभद्रा कामगारों को इस बात पर राज़ी कर लेती है कि अब से न कोई काम करेगी, न किसी और कामगार को काम करने देगी, जब तक कि उनकी तनख्वाह न बढ़ाई जाए। इन कामगारों की छोटी छोटी गोष्ठियां होने लगती हैं जहां ये अपने काम से जुड़ी समस्याओं, उलझनों की चर्चा शुरू करती हैं। किस तरह सुबह सात बजे से पहले ही इनकी दिनचर्या शुरू हो जाती है, और महीने भर घरों में झाड़ू, बर्तन, कपड़े व सफाई करने के बाद महीने के 30 रुपए मिलते हैं। इस पर उन्हें घरों में छुआछूत, अलग खाने-पीने के बर्तन और कभी-कभी मारपीट जैसी हिंसा भी सहनी पड़ती हैं।

महिलाओं की इस अगुवाई पर कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया और *पुणे शहर मोलकरणी संघ* की स्थापना की। फिर आठ सौ महिला घरेलू कामगारों ने शहर में जुलूस निकाला और चार से आठ दिनों तक हड़ताल की।

रात बारह बजे तक गोष्ठियां कीं। यह सिलसिला करीब पन्द्रह दिनों तक चलता रहा। इन गोष्ठियों में घरेलू काम से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ महिलाओं के अधिकारों पर भी बात होनी शुरू होने लगी। इन महिलाओं ने अपनी मांगों का निवेदन पत्र तैयार किया और कलेक्टर के सामने पेश किया। कामगारों की मांगें निम्न थीं:

- काम के अनुसार तनख्वाह
- बीमारी के समय तनख्वाह में कटौती न हो
- हर महीने दो दिन की छुट्टी
- छुट्टियों में मालिक के बाहर जाने पर कामगारों की तनख्वाह न काटी जाए
- एक महीने की तनख्वाह, एक हर साल बोनस के रूप में मिले
- घरों में अपमानजनक व्यवहार न किया जाए
- होली, दीवाली, गणेश चतुर्थी में जैसे बड़े त्योहारों पर वेतनयुक्त अवकाश

उन्हीं दिनों मज़दूर संघ की सभा के लिए श्रम मज़दूरों की एक सभा बुलाई गई थी जिस सभा में पहली बार घरेलू महिला कामगार महिलाओं की समस्या को भी सामने रखा गया। सभा में मांग हुई कि घरेलू कामगारों को समस्याओं के हल के लिए एक जांच समिति बनाई जाए। इस जुड़ाव से न सिर्फ़ घरेलू कामगार औरतों को मज़दूर संघ का सहयोग मिला बल्कि ऐसे मंचों पर घरेलू काम की, मज़दूरों की श्रेणी में पहचान भी बनी।

महिला घरेलू कामगारों की कुछ मांगे पूरी हुईं और कुछ नहीं। ऐसा नहीं है कि हड़ताल के दौरान इन महिलाओं को परिवार चलाने की मुसीबतें नहीं उठानी पड़ी। इनका बहुत मज़ाक उड़ाया गया, सबने कहा तब ये औरतें नेता बन गई हैं, मगर फिर भी इन्होंने हार नहीं मानी। इनकी एकजुटता ने इनके अधिकारों की मांग पूरी की जो राज्य में घरेलू कामगार की सामाजिक सुरक्षा बिल पारित होने का आधार बनी।

बेबी हालदार

निर्देशिका : अनु मेनन

अवधि : 22 मिनट

भाषा : अंग्रेज़ी

फ़िल्म एक घरेलू कामगार महिला, *बेबी हालदार* के जीवन सफ़र की कहानी कहती है जो अपने बचपन में पारिवारिक स्थितियों के कारण केवल चौथी कक्षा तक पढ़ पाती है मगर अपनी आत्म-कथा लिख उन तमाम औरतों की आवाज़ बनती है, जो हमारे समाज में गरीबी, अशिक्षा और गरिमापूर्ण जीवन जीने के हक़ से वंचित हैं।

फ़िल्म बेबी हालदार से बातचीत के दौरान उसके सशक्त व्यक्तित्व के कई पहलुओं को सामने लाती है। फ़िल्म की शुरूआत में बेबी हालदार की भूमिका दिल्ली में घरेलू कामगार के रूप में दिखाई गई है। बातचीत के दौरान पता चलता है कि बेबी की मां भी घरेलू कामगार थी और अपने पति की रोज़ की प्रताड़ना से पीड़ित थी। पारिवारिक स्थितियां कुछ बदलती है और बेबी को छोटी उम्र में छोड़कर मां को घर से निकलना पड़ता है। पिता दूसरी पत्नी लाते हैं और घर के तनाव भरे माहौल में और बढ़ोतरी होती है। पारिवारिक क्लेश में बेबी की पढ़ाई छूट जाती हैं और बारह साल की छोटी उम्र में उसकी शादी तीस साल के पुरुष से कर दी जाती है। बेबी के लिए अपने पति के साथ का अनुभव अपने पिता के घर के अनुभव से ज़्यादा भयावह साबित होता है। बेबी बताती है कि वो खुद बच्ची थी और दो बच्चों की मां बन गई। पति के साथ जब रहना दूभर हो गया तो उसने बच्चों को लेकर भाई के पास जाने की ठानी और पति का घर छोड़कर दिल्ली चली आई।

दिल्ली आकर बेबी के जीवन का नया सफ़र शुरू होता है। घरेलू कामगार की भूमिका में बेबी काम करना शुरू करती है। बेबी बताती है *'तसलीमा नसरीन की किताब जब मैंने पढ़ी तो मुझे लगा ये मेरी बातें हैं।'* अपने मालिक के प्रोत्साहन से वह अपनी जीवनी लिखती है। बेबी अपनी किताब के माध्यम से सवाल पूछती है कि 'क्यों घर के काम की कोई मान्यता नहीं होती? घर का काम छोटा क्यों माना जाता है? क्या दफ्तर का काम ही काम है?'

बेबी हालदार की जीवन एक किताब के रूप में भी प्रकाशित की गई है। प्रकाशक इस किताब के बारे में कहती हैं, 'बेबी की किताब चुप्पी तोड़ने और उसके लिखने पढ़ने के संघर्ष की कहानी है जिसमें बहुत दर्द है मगर कहीं भी कहानी में रोने-धोने के चित्रण नहीं मिलते। बेबी ने इस किताब को बहुत ही सुन्दर, सहज भाषा और गहराई से लिखा है।'

बेबी हालदार को कई सम्मान मिले हैं, जिनमें स्त्री अधिकार संगठन की तरफ से स्त्री सम्मान भी है। आज बेबी अपने दो बच्चों के साथ रहती है और घरेलू कामगार के साथ-साथ एक सफल लेखिका भी है।

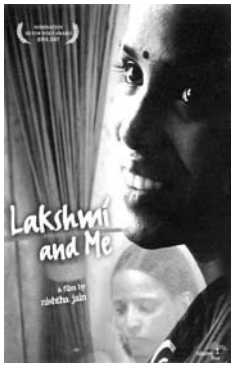

लक्ष्मी एंड मी

निर्देशिका : निष्ठा जैन
अवधि : 59 मिनट
भाषा : हिन्दी, तमिल, मराठी
(अंग्रेज़ी सबटाईटल के साथ)

यह डाक्यूमेंटरी फ़िल्म फ़िल्मकार व उसकी घरेलू कामगार लक्ष्मी के आपस के सहजपूर्ण रिश्ते को दर्शाती है। दोनों के बीच सिर्फ़ मालिक और नौकर का रिश्ता ही नहीं है बल्कि लक्ष्मी को फिल्मकार से हर तरह का सहयोग मिलता है। लक्ष्मी छः सौ रुपए महीने की तनख्वाह पर दस घंटे, छः घरों में काम करती है। अपने घर को चलाने की ज़िम्मेदारी लक्ष्मी पर ही है। उसका पिता शराबी है और मारपीट करता है। लक्ष्मी एक साहसी महिला है और अपने पिता की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अपनी पंसद के लड़के के साथ घर बसाती है।

तकरीबन एक घंटे की इस फ़िल्म में लक्ष्मी के परिवार के हालातों का ब्योरा, उसकी अपनी संस्कृति, त्योहार मनाने के तरीकों व फ़िल्मकार के परिवार के साथ मेल-मिलाप के रिश्तों पर बात की गई है। फ़िल्म महिला घरेलू कामगार के संघर्षों के राजनैतिक पक्षों को सामने लाने में असफल रही है। यह पक्ष फ़िल्म फ़िल्मकार के अपनी घरेलू कामगार से सौहार्दपूर्ण रवैये पर केंद्रित है पर यह पक्ष भी केवल दो विभिन्न वर्गों की महिलाओं के आपसी रिश्ते तक सिमट कर रह गया है।